योना

1 याहवे ने यह संदेश अमित्तै के बेटे योना
को दिया, 2 उठो और बड़े नगर नीनवे
को जाओ, और उसके खिलाफ़ संदेश देना;
क्योंकि मेरी नज़र में उनके बुरे काम बहुत
ज़्यादा हो गए हैं। 3 लेकिन योना ने याहवे
के सामने से तर्शीश को भाग जाने का इरादा
किया, और वह याफा नगर को चला गया।
वहाँ जाकर वह भाड़ा देकर तर्शीश जानेवाले
जहाज में बैठ गया और साथी मुसाफिरों के
साथ वह याहवे के सामने से भागकर तर्शीश
की ओर चल पड़ा। 4 फिर याहवे ने समुद्र
में एक बड़ा तूफान भेजा। यह तूफान इतना
भयानक था कि जहाज टूटने लगा। 5 जहाज
के चलाने वाले डर गए और अपने अपने
देवता को पुकारने लगे। जहाज व्यापार की
सामग्री से भरा हुआ था, उसे उन्हें समुद्र में
फेंकने पड़ा ताकि जहाज हल्का हो जाए।
लेकिन योना जहाज के निचले हिस्से में
जाकर सो गया और उसे गहरी नींद लग गई।
6 जहाज के कप्तान ने उसे पाया आया और
बोला, “तुम इतनी गहरी नींद में सो रहे हो?
उठो, अपने ईश्वर को पुकारो! हो सकता है
परमेश्वर हम पर दया करे और हम बर्बाद
होने से बच जाएँ।” 7 फिर वे लोग आपस
में कहने लगे, “चलो, हम चिट्ठी डालते हैं
और देखते हैं यह विपत्ति हम पर किसके
कारण आई है।“उन्होंने चिट्ठी डाली, और
चिट्ठी योना के नाम पर निकली। 8 तब वे
उससे कहने लगे, “हमें बताओ किस वजह
से यह विपत्ति हम पर आई है, तुम करते क्या
हो, और कहाँ से आए हो?” 9 उसने उन्हें
बताया, “मैं इब्री हूँ; और स्वर्ग के परमेश्वर
जिन्होंने सब कुछ बनाया है, उनका डर मेरे
मन में है।” 10 यह सुनकर वे बहुत डर गए,
और बोल पड़े, “तुमने यह क्या कर दिया?”
उन्होंने जान लिया कि वह याहवे के सामने से
भाग आया है, उसने अपने मुँह से ये सारी बातें
उन्हें बताई थी। 11 उन्होंने उससे पूछा, “हम
तुम्हारा करें तो क्या,जिससे समुद्र शान्त हो
जाए?” क्योंकि समुद्र की लहरें बढ़ती ही जा
रही थीं। 12 उसने कहा, “मुझे उठाकर समुद्र
में फेंक दो, और समुद्र शान्त हो जाएगा। मुझे
पता है कि मेरी ही वजह से यह बड़ा तूफान
आया है। 13 फिर भी वे जहाज हाँकने की
कोशिश करते रहे कि उसे किनारे पर ले जाएँ,
लेकिन वे कामयाब नहीं हुए, क्योंकि समुद्र
की लहरें और बढ़ती जा रही थीं। 14 फिर वे
याहवे को पुकारते हुए कहने लगे, ”हे याहवे,
हम आपसे बिनती करते हैं, कि इस व्यक्ति
की वजह से हमें बर्बाद मत होने दीजिए।
इस बेकसूर इन्सान को मारने का दोष हम
पर मत लगाइए; क्योंकि हे याहवे, आपने
यह सब अपनी इच्छा के मुताबिक ही किया
है। 15 फिर उन्होंने योना को उठाकर समुद्र
में फेंक दिया; और समुद्र की भयंकर लहरें
थम गई। 16 वे लोग याहवे का डर मानने
लगे। उन लोगों ने भेंट भी चढ़ाई और मन्नतें
मानीं। 17 योना को निगलने के लिए याहवे ने
एक बड़ा मगरमच्छ भेजा और योना को उस
मगरमच्छ ने निगल लिया। उसके पेट में योना
तीन दिन और तीन रात पड़ा रहा।

2 तब योना ने मगरमच्छ के पेट में से
परमेश्वर याहवे से प्रार्थना करते हुए
कहा, 2 “संकट में पड़ने पर याहवे को मैंने
पुकारा, और उन्होंने मेरी दुआ सुन ली है।
मैं अधोलोक के पेट में पड़े हुए चिल्ला उठा,

तब आपने मेरी सुन ली। 3 आपने मुझे गहिरे
सागर में समुद्र की गहराई में भेज दिया, और
मैं धाराओं के बीच में पड़ा रहा। आपके
द्वारा भड़काई हुई सब तरंग और लहरें मेरे
ऊपर से बह रही थीं। 4 फिर मैंने कहा, आपने
मुझे अपने सामने से निकाल दिया है, फिर
भी मैं आपके पवित्र मंदिर की ओर फिर
देखूँगा। 5 मैं पानी से इस तरह घिरा हुआ
था कि मेरी जान निकल रही थी। मेरे चारों
ओर गहिरे समुद्र का पानी ही पानी था, और
मेरे सिर में काई लिपट गई थी। 6 मैं पहाड़ों
की जड़ तक पहुँच गया था। मैं हमेशा के
लिए धरती के पेट में बन्द हो गया था, फिर
भी मेरे परमेश्वर याहवे, आपने मेरे प्राणों को
गड्ढे में से उठाया है। 7 जब मैं बेहोश होने
लगा, तब मैंने याहवे को याद किया। मेरी
विनती आपके पास, आपके पवित्र मन्दिर
में पहुँच गई। 8 जो लोग धोखा देने वाली
फालतू चीज़ों पर मन लगाते हैं, वे अपने
करुणानिधान परमेश्वर से मुँह फेर लेते हैं।
9 लेकिन मैं उँचे शब्द से धन्यवाद करते हुए
आपको बलिदान चढ़ाऊँगा। मैं अपनी मन्नतों
को भी पूरा करूँगा। उद्धार याहवे ही भेजते
हैं! 10 फिर याहवे ने मगरमच्छ को आज्ञा दी,
और उसने योना को समुद्र के किनारे आकर
उगल दिया।

3 याहवे ने दूसरी बार अपना संदेश योना
के पास भेजा, 2 "उठो और उस बड़े
नगर नीनवे को जाओ, और जो मैं कहना
चाहता हूँ उसका वहाँ प्रचार करो। 3 तब
योना याहवे की बात मानकर नीनवे को गया।
नीनवे एक बहुत बड़ा नगर था, वहाँ पहुँचने
के लिए तीन दिन लगते थे। 4 योना ने एक
दिन का सफर पूरा कर लिया। वह यह संदेश
सुनाता गया कि अब से चालीस दिन के बाद
परमेश्वर नीनवे पर बड़ी विपत्ति भेजेंगे और
नीनवे बर्बाद हो जाएगा। 5 यह सुनकर नीनवे
के लोगों ने परमेश्वर की बातों पर विश्वास
किया तथा उन्होंने पूरे नगर में उपवास का
ऐलान किया और छोटे-बड़े पश्चाताप करने
लगे। 6 यह खबर नीनवे के राजा के कान तक
पहुँची। उसने भी अपने सिंहासन से उठकर
अपने राजसी पहरावे को उतारा और टाट
पहनकर और राख पर बैठकर पश्चाताप करने
लगा। 7 राजा ने अफसरों से सलाह-मशविरा
कर नीनवे में इस आदेश की घोषणा की, कि
कोई भी मनुष्य, गाय-बैल, भेड़-बकरी, या
दूसरा कोई जानवर कुछ नहीं खाएगा और न
ही पानी पीएगा। 8 मनुष्य और जानवर दोनों
ही टाट पहनकर परमेश्वर के सामने रो-रोकर
बिनती करें, अपने सारे बुरे कामों को छोड़
दें और परमेश्वर की ओर मुड़ें । 9 हो सकता
है कि, परमेश्वर दया करें और अपना मन
बदल दें। उनका गुस्सा भी शान्त हो जाए और
हमारा नाश न हो। 10 परमेश्वर ने उनके कामों
को देखा, कि उन्होंने गलत काम करना छोड़
दिया है, और परमेश्वर का मन बदल गया।
उन्हें बर्बाद करने का अपना इरादा उन्होंने
बदल दिया।

4 योना को यह बात बुरी लगी, और
वह बहुत गुस्सा हो गया। 2 वह याहवे
से प्रार्थना करने लगा कि हे याहवे, जब
मैं अपने देश में था, तब क्या मैंने आपसे
यही बात नहीं कहीं थी? यही कारण था
कि मैं आपका आदेश सुनते ही तर्शीश को
भाग गया; क्योंकि मुझे पता था कि आप
अनुग्रहकारी, देर से गुस्सा करने वाले, दयालु
परमेश्वर हैं, और आपको किसी को दुख देना
अच्छा नहीं लगता। 3 इसलिए अब हे याहवे,
मेरी जान ले लीजिए; ज़िन्दा रहने से मेरे लिए
मरना ही अच्छा है। 4 याहवे बोले, "क्या तेरा
गुस्सा करना सही है?" 5 यह सुनकर योना

उस नगर से निकल गया और पूर्व में जाकर बैठ गया। वहाँ एक छत बनाकर उसकी छाँव में बैठकर देखने लगा कि नगर का क्या होता है। 6 फिर ऐसा हुआ कि याहवे परमेश्वर ने एक रेंड़ का पेड़ उगाकर उसको ऐसा बड़ा कर दिया कि योना के सिर पर उसकी छाँव पड़ गई ताकि उसकी तकलीफ दूर हो। योना को रेंड़ के पेड़ से बहुत खुशी मिलीऔर आराम मिला। 7 लेकिन दूसरे दिन सुबह होते ही परमेश्वर ने एक कीड़े को भेजा, और उसने उस रेंड़ के पेड़ को खा लिया और वह सूख गया। 8 सूरज के निकलने पर परमेश्वर ने पूर्व से गर्म हवा बहाई, और गर्मी की वजह से योना का सिर चकराने लगा और वह बेहोश होने लगा। फिर वह यह कहकर मौत माँगने लगा कि मुझे ज़िन्दा नहीं रहना है, मेरा मर जाना ही अच्छा है। 9 परमेश्वर योना से बोले, “रेंड़ के पेड़ के कारण तुम्हारा इतना गुस्सा करना क्या ठीक है?” योना ने जवाब में कहा, “जी हाँ, मेरा गुस्सा सही है, बल्कि गुस्से से मैं मर जाता तो अच्छा ही होता ।” 10 याहवे ने फिर उससे कहा,” जो रेंड़ का पेड़ तुमने नहीं लगाया, जिसके लिए तुमने कोई मेहनत नहीं की, उसको बड़ा नहीं किया। वह एक ही रात में बड़ा हुआ और एक ही रात में सूख भी गया; उस पर तुम्हें इतनी दया आ रही है। 11 जरा सोचो, इस बड़े नगर नीनवे में एक लाख बीस हजार से अधिक मनुष्य हैं जो अपने दाहिने- बाएँ हाथों का भेद नहीं पहचानते। उसमें बहुत सारे घरेलू जानवर भी रहते हैं। ऐसे में क्या मुझे इस नगर पर दया नहीं करनी चाहिए?”

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com